7. नीतिवचनानि

हिंदी अर्थ–

विद्या विनम्रता देती है। विनम्रता से योग्यता प्राप्त होती है। योग्यता से धन प्राप्त होता है। धन से धर्म और उससे सुख मिलता है।

हे सरस्वती! यह तुम्हारा कोई अनोखा ही खजाना है जो खर्च करने पर वृद्धि को प्राप्त होता है (और) जोड़ने पर नाश को प्राप्त होता है।

जिसके बोल मधुर हैं, जिसके कार्य परिश्रमपूर्ण हैं, जिसकी लक्ष्मी (धन) दान से पूर्ण है (अर्थात् जो दान करता है) उसका जीवन सफल है।

संसार में चन्दन शीतल होता है, चन्दन से भी चन्द्रमा शीतल होता है। चन्द्रमा और चन्दन से साधुओं की संगति शीतल होती है।

आलसी को विद्या कहाँ, विद्याहीन को धन कहाँ। धनहीन को मित्र कहाँ और मित्रहीन को सुख कहाँ। (अर्थात् आलसी व्यक्ति को विद्या नहीं मिलती, विद्याहीन को धन नहीं मिलता, धनहीन को मित्र नहीं मिलता और मित्रहीन को सुख नहीं मिलता।)

हाथ का आभूषण दान है। कण्ठ का आभूषण सत्य है। कान का आभूषण शास्त्र है। फिर अन्य आभूषणों से क्या प्रयोजन है।

यह मेरा है अथवा पराया है। यह गणना छोटे दिल वालों की है (अर्थात् यह मेरा है, यह दूसरे का है ऐसा छोटे दिल वाले कहते हैं।) उदार चरित्र वालों के लिए तो सारी धरती ही परिवार है।

अभ्यासः

संकलनात्मकं मूल्यांकनम्

1. **पठत पुनः च लिखत–** (पढ़िए और फिर से लिखिए–)
   दिए गए शब्दों का छात्र शुद्ध उच्चारण करें तथा उन्हें फिर से दी गई जगह में लिखें।

2. **उचितम् उत्तरं चिनुत–** (उचित उत्तर चुनिए–)

   (क) (*ii*) विनयात् ✓ (ख) (*i*) सञ्चयात् ✓

   (ग) (*iii*) मधुरा ✓ (घ) (*iv*) चन्द्रमाः ✓

   (ङ) (*iii*) अधनस्य ✓

3. (*i*) **प्रथमश्लोकमाधृत्य एकपदेन उत्तरत–** (पहले श्लोक के आधार पर एक पद में उत्तर दीजिए–)

(क) विनयम् (ख) पात्रताम् (ग) धनम् (घ) सुखम्

(*ii*) **चतुर्थश्लोकमाधृत्य एकपदेन उत्तरत–** (चौथे श्लोक के आधार पर एक पद में उत्तर दीजिए–)

(क) चन्दनम् (ख) चन्द्रमाः (ग) साधुसङ्गतिः

(*iii*) **षष्ठ-श्लोकमाधृत्य एकपदेन उत्तरत–** (छठे श्लोक के आधार पर एक पद में उत्तर दीजिए–)

(क) हस्तस्य (ख) सत्यम् (ग) शास्त्रम् (घ) भूषणैः

4. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–** (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)

(क) यतोहि अयं कोशः व्ययतो वृद्धिम् आयाति, सञ्चयात् च क्षयम् आयाति।

(ख) यः मधुरं वदति, श्रमं करोति दानं च करोति तस्य जीवनं सफलं भवति।

(ग) अयं निजः परः वा इति गणना लघुचेतसां भवति।

(घ) उदारचरितानां वसुधैव कुटुम्बकं भवति।

(ङ) शास्त्रं श्रोत्रस्य भूषणं भवति।

5. **वर्णसंयोजनं कुरुत–** (वर्ण संयोजन कीजिए–)

व् + इ + न् + अ + य् + आ + त्	=	विनयात्
प् + आ + त् + र् + अ + त् + आ + म्	=	पात्रताम्
ल् + अ + क् + ष् + म् + ई + :	=	लक्ष्मीः
क् + र् + इ + य् + आ	=	क्रिया
व् + इ + द् + य् + आ	=	विद्या (विद्या)
अ + म् + इ + त् + र् + अ + स् + य् + अ	=	अमित्रस्य
अ + प् + ऊ + र् + व् + अ + :	=	अपूर्वः
श् + र् + ओ + त् + र् + अ + स् + य् + अ	=	श्रोत्रस्य

6. **रञ्जितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–** (रंगीन पदों के आधार पर प्रश्न बनाइए–)

(क) **कस्य** भूषणं दानं भवति?

(ख) **कस्य** भूषणं सत्यं भवति?

(ग) **कस्य** भूषणं शास्त्रं भवति?

(घ) **कयोः** मध्ये साधुसङ्गतिः शीतला भवति?

(ङ) **केषां** तु वसुधैव कुटुम्बकं भवति?

7. **निर्देशानुसारम् उत्तरत–** (निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए–)

(क) (*i*) विद्या ☑ (ख) (*ii*) सञ्चयः ☑

(ग) (*iii*) पञ्चमी ☑ (घ) (*ii*) वा ☑

(ङ) (*i*) धरा ☑

8. **मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–** (मञ्जूषा से पद चुनकर खा
जगह भरिए–)

(क) पात्रत्वात् **धनम्** आप्नोति।
(ख) यस्य लक्ष्मीः **दानवती** भवति तस्य जीवनं सफलं भवति।
(ग) चन्द्रमाः **चन्दनात्** अपि शीतलः भवति।
(घ) अधनस्य **मित्रं** न भवति।
(ङ) कण्ठस्य भूषणं **सत्यं** भवति।
(च) उदारचरितानां **वसुधा** एव कुटुम्बकं भवति।

9. **अन्वयं पूरयत–** (अन्वय पूरा कीजिए–)

भारति! तव अयं (विद्यारूपी) कोशः कः अपि **अपूर्वः** (कोशः) **विद्यते**। (य
व्ययतः वृद्धिम् **आयाति**, (च) **सञ्चयात्** क्षयम् **आयाति**।

10. **क्रियापदानाम् धातु-लकार-पुरुष-वचनानि लिखत–** (क्रियापदों के धातु, ल
पुरुष, वचन लिखिए–)

क्रियापदानि	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
ददाति	√दा	लट्	प्रथमः	एकवचनम्
नमन्ति	√नम्	लट्	प्रथमः	बहुवचनम्
पठामः	√पठ्	लट्	उत्तमः	बहुवचनम्
करिष्यसि	√कृ	लृट्	मध्यमः	एकवचनम्
पठिष्यामि	√पठ्	लृट्	उत्तमः	एकवचनम्
अपठन्	√पठ्	लङ्	प्रथमः	बहुवचनम्
अकुर्वन्	√कृ	लङ्	प्रथमः	बहुवचनम्

मकं मूल्यां

9. राजस्थानस्य यात्रावर्णनम् (सन्धिः, संयोगः)

हिंदी अर्थ-

दिल्ली

7.01.20....

प्रिय मित्र सौम्य

स्नेह सहित नमस्कार

यहाँ सब कुशल है वहाँ भी कुशल हों। तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। पत्र लिखने में देर हुई। मैं सर्दियों की छुट्टियों में अपने परिवार के साथ राजस्थान गया था। पहले हम सब जयपुर गए।

'गुलाबी नगरी' इस नाम से प्रसिद्ध जयपुर राजस्थान की राजधानी है। इस नगर को 1728 ई. में महाराजा जयसिंह द्वितीय ने स्थापित किया था। यहाँ अम्बर दुर्ग, नाहरगढ़ दुर्ग, जय दुर्ग, हवा महल, सिटीपैलेस आदि अनेक स्थान हैं।

जयपुर से हम सब जोधपुर देखने के लिए गए। जोधपुर में हमने मेहरानगढ़दुर्ग और उम्मेदभवन महल देखे। जोधपुर तो 'सूर्यनगरी' नाम से भी प्रसिद्ध है क्योंकि पूरे भारतवर्ष में इस स्थान पर सबसे अधिक सूर्य का प्रकाश मिलता है। राजस्थान के नृत्य तो सबको ही आकर्षित करते हैं। बीकानेर में बनी 'भुजिया' बहुत दूर तक लोकप्रिय है। हमने वहाँ पुतलियों का नृत्य देखा।

इन सरदियों की छुट्टियों में तुम कहीं गए थे अथवा नहीं; यह पत्र के द्वारा सूचित करना। घर में सबको मेरा प्रणाम।

आपका मित्र
शान्तनु शुक्ल

अभ्यासः

संकलनात्मकं मूल्यांकनम्

1. **पठत पुनः च लिखत–** (पढ़िए फिर से लिखिए–)
   दिए गए शब्दों को छात्र बोलकर पढ़ें तथा उन्हें लिखें।
2. **उचितम् उत्तरं चिनुत–** (उचित उत्तर चुनिए–)
   (क) (*iii*) पत्रलेखने ☑ (ख) (*i*) जयपुरे ☑
   (घ) (*iv*) जयपुरस्य ☑ (ङ) (*ii*) सूर्यनगरी ☑
3. **एकपदेन उत्तरत–** (एक पद में उत्तर दीजिए–)
   (क) शान्तनुः (ख) सौम्यम् (ग) शीतावकाशे
   (घ) जयपुरनगरम् (ङ) जोधपुरनगरम् (च) बीकानेरस्य
   (छ) जोधपुरस्य (ज) बीकानेरे
4. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–** (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)
   (क) शान्तनुः स्वमित्रं सौम्यं प्रति पत्रम् अलिखत्।
   (ख) पत्रे राजस्थानस्य यात्रायाः वर्णनमस्ति।
   (ग) जयपुरनगरस्य अम्बरदुर्गं, नाहरगढ़दुर्गं, जयदुर्गं, हवामहलं सिटीपैलेसस्थानम् आदि स्थानानि प्रसिद्धानि सन्ति।
   (घ) जोधपुरनगरे ते मेहरानगढ़दुर्गम् उम्मेदभवनमहलम् च अपश्यन्।
   (ङ) ते पुत्तलिकानृत्यम् अपश्यत्।
5. **सन्धिच्छेदं सन्धिं वा कुरुत–** (सन्धि विच्छेद अथवा सन्धि कीजिए–)

यथा– तत्रास्तु = तत्र + अस्तु
प्रत्येकम् = प्रति + एकम्
यथा– महा + उदयः = महोदयः
सर्व + उत्तमम् = सर्वोत्तमम्

इत्यादिः = इति + आदिः
शीतावकाशे = शीत + अवकाशे
सर्व + अधिकम् = सर्वाधिकम्

6. **प्रकृतिं प्रत्ययं च पृथक्-पृथक् कुरुत–** (प्रकृति और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए–)

यथा– द्रष्टुम् = √दृश् (पश्य्) + तुमुन्
पठितुम् = √पठ् + तुमुन्
गन्तुम् = √गम् (गच्छ्) + तुमुन्
खेलितुम् = √खेल् + तुमुन्

यथा– आदाय = आ + √दा + ल्यप् (य)
संपठ्य = सम् + √पठ् + ल्यप्
आनीय = आ + √नी + ल्यप्
हसित्वा = √हस् + क्त्वा
दृष्ट्वा = √दृश् + क्त्वा
आरुह्य = आ + √रुह् + ल्यप्
उपगम्य = उप + √गम् (गच्छ्) + ल्यप्
खादित्वा = √खाद् + क्त्वा
पृष्ट्वा = √पृच्छ् + क्त्वा

7. **समुचितां विभक्तिं प्रयोज्य रिक्तस्थानानि पूरयत–** (उचित विभक्ति लगाकर रिक्त स्थान भरिए–)

(क) वयम् **रेलयानेन** दिल्लीनगरम् अगच्छाम।
(ख) **जयपुरात्** ते जोधपुरनगरम् अगच्छन्।
(ग) अध्यापकः **विवेकाय** पुरस्कारं यच्छति।
(घ) **वृक्षे** चटकाः कूजन्ति।
(ङ) भक्ताः **ईश्वरं** नमन्ति।
(च) नेहा **जनकेन** सह आपणं गच्छति।

8. **सन्धि-संयोगं पृथक्-पृथक् कुरुत–** (सन्धि और संयोग अलग-अलग कीजिए–)

	सन्धिः	संयोगः
यथा–	देव + ऋषिः	एवम् + एव
	दिन + ईशः	चित्रम् + अपश्यत्
	महा + उत्सवः	पत्रम् + अलभे
	सु + उक्तिः	प्रसिद्धम् + अस्ति
	सदा + एव	वयम् + अत्र

9. **क्रियापदानां धातु-लकार-पुरुष-वचनानि लिखत–** (क्रियापदों के धातु, लकार, पुरुष तथा वचन लिखिए–)

	क्रियापदानि	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
यथा–	अलभे	√लभ्	लङ्	उत्तमः	एकवचनम्
	अभवत्	√भू	लङ्	प्रथमः	एकवचनम्
	अगच्छाम	√गम् (गच्छ्)	लङ्	उत्तमः	बहुवचनम्
	सन्ति	√अस्	लट्	प्रथमः	बहुवचनम्
	अपश्याम	√दृश् (पश्य)	लङ्	उत्तमः	बहुवचनम्
	अगच्छः	√गम् (गच्छ्)	लङ्	मध्यमः	एकवचनम्
	सूचय	√सूच्	लोट्	मध्यमः	एकवचनम्
	वसति	√वस्	लट्	प्रथमः	एकवचनम्